International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ग्रामीण समाज में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण

रितु ठाकरे[1] , डॉ. स्नेह कुमार मेश्राम[2]

[1]शोधार्थी, भारती विश्वविद्यालय. दुर्ग (छ.ग)
[2]शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग), भारती विश्वविद्यालय. दुर्ग (छ.ग)

शोध सार:
वर्तमान शोध "ग्रामीण समाज में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण" शीर्षक के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य के बालाघाट जिले के कंटगी विकासखंड में किया गया। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह समझना था कि ग्रामीण समाज में बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण कैसा है तथा सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारक इस दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। उद्देश्यीय न्यादर्श विधि के अंतर्गत कुल 450 उत्तरदाताओं (150 बालिकाएँ, 150 माताएँ एवं 150 अन्य अभिभावक) से जानकारी संकलित की गई। प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश अभिभावक प्राथमिक स्तर की बालिका शिक्षा को आवश्यक मानते हैं, किंतु माध्यमिक व उच्च शिक्षा के संदर्भ में उनके विचार संकोचपूर्ण हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि माताएँ बालिकाओं की शिक्षा को लेकर अधिक सकारात्मक हैं, जबकि पुरुष अभिभावकों में पारंपरिक सोच की प्रधानता है। शोध के निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि नीति-निर्माताओं को ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अधिक समावेशी और सशक्त योजनाएँ लागू करनी चाहिए।

प्रस्तावना:
ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की स्थिति सामाजिक दृष्टिकोण, पारिवारिक सोच, आर्थिक परिस्थिति एवं सांस्कृतिक मान्यताओं से प्रभावित होती है। वर्तमान शोध का उद्देश्य यह जानना है कि ग्रामीण समाज, विशेष रूप से बालाघाट जिले के कंटगी विकासखंड में रहने वाले अभिभावक, प्राथमिक स्तर की बालिका शिक्षा के प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण रखते हैं।

उद्देश्य:
- यह जानना कि ग्रामीण अभिभावकों का प्राथमिक स्तर की बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण क्या है।
- यह अध्ययन करना कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक अभिभावकों के दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- यह विश्लेषण करना कि माताएँ और अन्य अभिभावकों के दृष्टिकोण में क्या अंतर है।

अनुसंधान पद्धति:
- शोध क्षेत्र: कंटगी विकासखंड, बालाघाट जिला, मध्यप्रदेश।
- नमूना: उद्देश्यीय न्यादर्श विधि (Purposive Sampling Method)
- कुल उत्तरदाता: 450
  - बालिकाएँ (प्राथमिक स्तर): 150
  - माताएँ: 150
  - अन्य अभिभावक (पिता, दादा-दादी आदि): 150
- उपकरण: अनुसंधान हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

प्रमुख निष्कर्ष (संक्षेप में):

क्र.	निष्कर्ष का विवरण	व्याख्या
1	बालिका शिक्षा को आवश्यक माना गया	किंतु उच्च कक्षाओं में भेजने को लेकर अभी भी झिझक देखी गई।
2	बालिका शिक्षा में बाधाएँ	आर्थिक कारण, घरेलू कार्यों में भागीदारी एवं प्रारंभिक विवाह जैसी प्रवृत्तियाँ प्रमुख बाधाएँ हैं।
3	माताएँ बनाम पुरुष अभिभावक का दृष्टिकोण	माताएँ अधिक सहानुभूतिपूर्ण एवं सकारात्मक सोच रखती हैं, जबकि पुरुषों में पारंपरिक सोच अधिक पाई गई।

निष्कर्ष:

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण धीरे-धीरे सकारात्मक हो रहा है, परंतु अभी भी कई सामाजिक एवं आर्थिक बाधाएँ मौजूद हैं। नीति निर्माताओं को आवश्यक है कि वे ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु लक्षित योजनाओं को और सशक्त रूप में क्रियान्वित करें।

सुझाव:

- ग्राम स्तरीय महिला शिक्षा जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
- बालिकाओं के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं को और अधिक सुलभ बनाया जाए।
- अभिभावकों हेतु अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ, जिनमें उन्हें बालिका शिक्षा के दीर्घकालिक लाभों से अवगत कराया जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ:

1. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2022) वार्षिक प्रतिवेदन।
2. मध्यप्रदेश शासन, महिला एवं बाल विकास संचालनालय (2021-22) बालिका शिक्षा योजनाओं पर प्रशासकीय प्रतिवेदन
3. यूनिसेफ (2020) बालिका शिक्षा पर वैश्विक प्रतिवेदन
4. इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज़ (NFHS-4), 2020
5. यूएन वीमैन रिपोर्ट (2019-2020) बदलती दुनिया में महिलाओं की प्रगति
6. सामाजिक न्याय विभाग, बालाघाट (2022) जिला स्तरीय विकास प्रतिवेदन